राष्ट्रपति स्काउट एवं गाइड पुरस्कार प्रमाण-पत्र वितरण समारोह के अवसर पर भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील का अभिभाषण

राष्ट्रपति भवन, 23 अगस्त, 2011

देवियो और सज्जनो,

मुझे भारत स्काउट एवं गाइड के पुरस्कार वितरण समारोह में भाग लेते हुए बहुत खुशी हो रही है। यह संगठन युवाओं के व्यक्तित्व के विकास में तथा उन्हें स्वार्थरहित सामुदायिक सेवा के लिए प्रोत्साहित करने के कार्य में लगा हुआ है। मैं इस आंदोलन को तथा पुरस्कार प्राप्त करने वाले सभी लोगों को उनके प्रयासों के लिए बधाई देती हूं।

पिछली बार, वर्ष 2009 के दौरान, स्काउटिंग के शताब्दी वर्ष के अवसर पर मैं स्काउटों एवं गाइडों से मिली थी और आज जब मैं आपसे मिल रही हूं, तब भारत में, बालिका गाइड आंदोलन के 100 वर्ष हो रहे हैं। आपके संगठन के लिए ये महत्त्वपूर्ण पड़ाव हैं और मैं इस अवसर पर आपका अभिनंदन करती हूं मैंने सदैव इस बात की वकालत की है कि लड़कियों को राष्ट्रीय मुख्य धारा में शामिल होना चाहिए और इसकी सभी गतिविधियों में भाग लेना चाहिए। इसलिए मुझे यह देखकर खुशी होती है कि लड़कियां गाइड बन रही हैं, एन.सी.सी. और पुलिस तथा सुरक्षा बलों में शामिल हो रही हैं। ये सभी स्वागत योग्य प्रयास हैं और मुझे यकीन है कि आने वाले समय में हमारा देश लैंगिक समानता के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। इसके लिए कुछ सामाजिक भेदभावों को त्यागना होगा, मानसिकता में बदलाव लाना होगा और देश की महिलाओं को उनके सशक्तीकरण के लिए पूरे अवसर प्रदान करने होंगे। आपको मालूम ही होगा कि हमारा समाज, दहेज तथा बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों से ग्रस्त है। मैं स्काउटों एवं गाइडों का आह्वान करूंगी कि वे इन कुरीतियों

के दुष्प्रभावों के बारे में बच्चों को बताएं जिससे वे पूर्ण विश्वास के साथ इन सामाजिक कुरीतियों से लड़ सकें।

हमारे देश के युवा भारत के भविष्य के निर्माता होंगे। वे हमारी अगली पीढ़ी हैं और उन्हें अधिक गतिशील समाज, मजबूत देश तथा बेहतर भविष्य के निर्माण के दायित्वों का निर्वाह करना होगा। अच्छा नागरिक बनने के लिए, आपको अच्छी शिक्षा प्राप्त करनी होगी, विभिन्न मुद्दों की गहरी समझ रखनी होगी और अच्छे मूल्यों का समावेश करना होगा। इससे देश की तरक्की में सहयोग मिलेगा। इसके अलावा, आपको उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रयास करने चाहिए। आप जो भी कार्य कर रहे हैं, उस पर गर्व करें। गांधी जी ने एक बार कहा था, ''चाहे आपको कितना भी कम महत्त्वपूर्ण कार्य करना हो, आप उसे अच्छे से अच्छे ढंग से करें और उस पर भी उतना ही ध्यान दें और सम्मान करें जितना कि आप उस कार्य का करते हैं, जो कि आपके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है। वास्तव में इन छोटे-छोटे कार्यों से ही आपको आंका जाएगा।'' कभी-कभी हम यह सोचते हैं कि हमें हमारी बड़ी-बड़ी उपलब्धियों से आंका और याद किया जाएगा और हमारे रोजमर्रा के कार्यकलाप कम महत्त्वपूर्ण हैं। यह बात एकदम गलत है। वास्तव में, प्रत्येक कदम, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, अगले कदम की ओर बढ़ता है। इसी तरीके से हम आगे बढ़ते हैं। यदि आप अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए, अच्छी आदत डालने के लिए और अच्छा कार्य करने के लिए, हर दिन कुछ-न-कुछ प्रयास करते हैं तो आप बेहतर भविष्य की ओर कदम बढ़ाते हैं। परंतु ध्यान रखें, यह जीवन, खुशनुमा मौकों पर खुशी से, कोई लक्ष्य पा लेने पर गर्व से और जब परिणाम हमारी अपेक्षाओं से कम हो तो निराशा, जैसे रंगबिरंगे अनुभवों से भरा पड़ा है। कभी-कभी चुनौतियां भी आएंगी। कभी-कभी विजय हाथ से फिसल जाएगी। परंतु सफलता नहीं मिलने का अर्थ यह नहीं है कि हम हिम्मत हार जाएं। इसका अर्थ केवल यह है कि हमें और अधिक कोशिश करनी है और तब तक करते रहनी है जब तक हम अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते। मुझे एक हिंदी कविता की दो पंक्तियां याद आ रही हैं—

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

इसलिए आगे बढ़ो और सभी चुनौतियों का बहादुरी से सामना करो।

यह प्रशंसा की बात है कि भारत स्काउट और गाइड देश के अलग-अलग हिस्सों से आकर एक इकाई के रूप में मिलकर कार्य करते हैं। इसके अलावा, आपके शिविर देश के विभिन्न भागों में आयोजित किए जाते हैं। इससे आपके बहुत से मित्र बने होंगे और मुझे उम्मीद है, इससे हमारे देश की व्यापक विविधता की समझ विकसित हुई होगी। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि भारत न केवल एक अति विशाल और वृहद् देश है बल्कि इसका एक समृद्ध सांस्कृतिक पटल है, बहुत-सी भाषाएं हैं और यहां सभी धर्मों के अनुयायी रहते हैं। फिर भी ये सभी मिलजुल कर रहते हैं। यही बात भारत को एक अनूठा स्थान बनाती है। सहिष्णुता और शंतिपूर्ण सह-अस्तित्व हमारी सभ्यता का मूल हैं। ये संदेश प्रत्येक काल में प्रासंगिक रहे हैं और संभवत: ये कभी अप्रचलित नहीं होंगे। हमारी प्रगति के दौरान भी इन्हीं मूल्यों से हमें शक्ति प्राप्त होगी। इसलिए यह जरूरी है कि आप इनका पालन करें। आपके संगठन को 1988 का इंदिरा गांधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार प्रदान किया गया था। आपको इस दिशा में अपने प्रयास जारी रखने होंगे।

एक और मुद्दा है जिसमें आपके योगदान की आवश्यकता पड़ेगी और वह है पर्यावरण प्रदूषण को रोकना और उसे वापस स्वच्छ बनाने का प्रयास करना। जलवायु परिवर्तन हमारे जीवन के लगभग प्रत्येक पहलू में, जिस हवा में हम सांस लेते हैं, जिस पानी को हम पीते हैं, जिस खाने को हम खाते हैं, जिन पर्यासों में हम रहते हैं, सभी में व्याप्त हो गया है और उसे प्रभावित कर रहा है। जिस तरह हमें पृथ्वी की जरूरत है, उसी तरह पृथ्वी चाहती है कि हम उसका सम्मान करें। प्रत्येक व्यक्ति को, इस बारे में अपना दायित्व समझना चाहिए। इसलिए पर्यावरण अनुकूल तरीके अपनाएं और अपने वातावरण को स्वच्छ रखने में मदद करें। यहां मैं सिविक भावना पैदा करने

की जरूरत पर बल देना चाहूंगी। हर एक व्यक्ति को यह शपथ लेनी चाहिए कि वह गलियों में कूड़ा नहीं डालेगा और अपने आसपास की जगह को साफ-सुथरा रखेगा।

भारत स्काउट एवं गाइड संगठनों के वरिष्ठ नायक तथा रोवर व रेंजर, उनको भी पुरस्कार दिए गए हैं, को इस आंदोलन के युवा सदस्यों का मार्गदर्शन करना चाहिए और अपने अनुभव बांटने चाहिए। वे सामुदायिक विकास और राष्ट्र निर्माण में सर्वोत्तम योगदान के बारे में बहुमूल्य परामर्श दे सकते हैं।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं यहां उपस्थित सभी लोगों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देती हूं। मैं, इस अभियान में गहन रुचि लेने के लिए विशेष रूप से श्री रामेश्वर ठाकुर को भी बधाई देती हूं।

धन्यवाद,

जय हिंद।